कृष्णलीला |

जब उत्तराखंड राज्य का जन्म हुआ तब हिमाचल और उत्तराखंड के मध्य की सरहद यमुना जी के बहाव ने आप ही निर्धारित कर दी थी | उत्तराखंड की राजधानी देहरादून से टेहरी क्षेत्र की ओर जाते हुए, यमुना की तीर पर एक गांव है | यहाँ से कुछ मील ऊपर से सपाट भूमि आरम्भ हो जाती है और पानी की गति मद्धम होने लगती है | कृषि प्रधान क्षेत्र होने से, धान और सरसों की भरपूर बिजाई होती है | भले ही दून से समीपता हो, और उत्तर की ओर अचल पहाड़ हों, गर्मियों में यहाँ भी आग बरसती है | साक्षरता का दिया प्रज्वलित हुए अब काफी समय बीत चला है, पर बरसों से चले आ रहे तौर तरीके यकायक ही तो नहीं छोड़े जाते | आधुनिकता का राग सुनना मानो भैंस के आगे बीन बजाना | फिर भी, धीरे धीरे यह क्षेत्र भी बढ़ रहा है | निकट में एक नगर है, जहां के दूध की अधिकाँश ज़रूरतें इस गांव के ग्वाले पूर्ण करते हैं | नदी की कगार पर एक प्राचीन बरगद का वृक्ष है | इसके ठूंठ के चरों ओर एक बड़ा सा चबूतरा बना है | पंचायत की बैठकें पंचायत घर में न हो कर यहाँ होती हैं, जैसे की हमेशा से होती आई हैं |

देहरादून और अन्य क्षेत्रों के विद्यालय ग्रीष्मकालीन अवकाश के चलते बंद हो चुके हैं | केसर, अपनी माता के साथ थोड़े दिनों के लिए अपने ननिहाल आया हुआ है, इस गांव में | केसर करीब नौ-दस साल का बालक होगा | चंचल स्वभाव, और देहरादून में पला बड़ा | ग्रीष्म काल की लंबी छुट्टियों में परिवार के सभी जन गांव आया करते हैं | परिवार में एकता और स्नेह इसी प्रकार बना रहता है, जब सभी लोग कुछ दिन अपनी व्यस्त दीनचर्या से निकाल कर एक दुसरे के साथ बिताते हैं |

उसकी नानी उसे रोज रात को खाना खाने के पश्चात पौराणिक कहानियाँ सुनती, कुछ पंचतंत्र से, कुछ जताका संग्रह से, तो कुछ हिंद अध्यात्म से चुनी हुई | मामा और मासी के बच्चों के साथ केसर भी इन कहानियों का लुत्फ उठाता | उसे सभी कहानियों में से कृष्ण और प्रहलाद की कहानियाँ बहुत रोचक लगती हैं |

\*\*\*\*\*

माँ दोपहर का भोजन करने के बाद सोने चली जाती | केसर भी थोड़ी देर सोने का नाटक करता और प्रतीक्षा करता माँ के सोने का | कभी कभी तो नाटक करते करते उसे नींद आ ही जाती | पर अन्य दिन मौका मिलते ही घर से निकल आता | गांव के बच्चे अपने पशुओं कों चारा कर इस समय नदी किनारे पानी पिलाने ले आते और स्वयं या तो नदी में पानी से खेलते, थोडा नहाते थोडा अपनी भैसों और गायों कों नहलाते, वर्ना बरगद के नीचे विविध प्रकार के खेल करते | केसर और कुछ अन्य लड़कों कों पेड़ पर चढ़ने में रोमांच आता |

रोज ही माँ कों चकमा दे कर केसर भाग निकलता | बचपन की मासूमियत भी बड़ी अनोखी होती है | अपनी आँखें मूँद लेने से समझ आता है कि कोई दूसरा भी हमें नहीं देख सकता | छल तो धूर्त प्राणी करते हैं, बच्चों कों अपने खेल और उसके प्रति निष्ठा के इलावा और किसी बात से क्या ताल्लुक? माँ कों सब पता है, फिर भी कुछ ममत्व के कारण तो कुछ सवेरे से काम करने की थकावट के कारण बरामदे में चटाई पर लेटी केसर के प्रस्थान की आहात सुनती है | मंद मंद उसके भोलेपन पर मुस्कुराती है, थोडा अपने कों भी झिडकती है कि भरी दोपहरी में घर से जाने दे रही है |

वहीँ केसर घर से निकलते ही ऐसी सरपट दौड लगाता मानो उसके अभाव में नदी सूखी जाती हो | बरगद की शीतल छाया और नदी का ठंडा पानी उसका स्वागत करते | आम तौर पर बड़े लोग नदी में पशुओं के पानी पीने के स्थान से कुछ हट कर, तट पर कुछ ऊपर की ओर नहाने धोने का काम करते हैं | पर बच्चे इन सब प्रबंधनों कों नहीं समझते | भैंसों की पूँछ पकड़ कर नदी में नहाने उतर जाते और उसी मट मैले पानी में खेल कूद करने लगते | केसर शहर से आया है, और बहुत छोटी उम्र से ही उसे स्वच्छता के उपदेश मिल चुके हैं | पर गांव में न जाने कभी कभी क्या हो जाता है, वह भी पानी में मस्ती करने उतर जाता है | माँ कों शायद इस बात की भनक नहीं पड़ी अब तक |

नानी कहानी में बतलाती हैं कि कृष्ण ग्वाले थे, ढेर सारी गायें लेकर रोज जंगल में चराने जाते थे, और हाथ में होती केवल एक बांसुरी | बांसुरी की धुन में केवल गाय ही नहीं, अपितु गोपियाँ भी खिंची चली आती थी अपने कान्हा कों देखने हेतु और कान्हा किसी ऊंची डाली पर बैठा, अपनी ही सुध में बांसुरी बजाता | बांसुरी की कमी यहाँ के यारों की एक तकनीक ने पूरी कर दी | उन्होंने केसर कों मुँह से सीटी बजाना सिखा दिया | अब तो रह रह कर पंक्तियाँ याद आती हैं,

*यह कदम्ब का पेड़ अगर माँ होता यमुना टीरे,*

*मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनाता धीरे धीरे ||*

बच्चों की कल्पना पर कोई लगाम नहीं होती | कच्ची मिट्टी की भांति रूप परिवर्तन करती रहती है और यत्र तत्र सर्वत्र गतिशील हो जाती है | केसर भी नानी के व्याख्यान सुन कर पुलकित हो उठता | कान्हा ने अपनी लीलाएं बहुत पैदा होते ही शुरू कर दी थी, पर नानी की कहानियों में न जाने ऐसा लगता कि कृष्ण केसर की उम्र जितने ही होते होंगे जब की यह कहानी है | अंततः केसर अपनी कल्पना में नानी के हर पात्र कों चेहरा देता जाता | अपनी स्मृती से कहीं यशोदा का किरदार अपनी माँ कों सौंप देता, कहीं गोपिओं के पात्र में कक्षा की सहेलियों कों देखता, और आप तो जानते हैं न की कृष्ण कौन बनता?

\*\*\*\*\*

“केसर, जल्दी नीचे उतर, वर्ना बहुत मार पड़ेगी”, माँ गुस्से से पुकारती | सांझ के समय माँ, ताई जी, बुआ जी और गांव की अन्य महिलाओं के साथ बरगद के पास के हैण्ड पम्प से पानी भरने आती | जब केसर नीचे उतरने लगता तो माँ का कलेजा मुँह कों आ जाता, विनती के स्वर में केसर से नेवेदन करती, “बेटा धीरे, संभल कर उतर, चोट लग जाएगी |” ज्यों ही बेटा ज़मीन पर, माँ उस पर फिर से हावी | माँ के भाव और व्यवहार की विपरीतता देखकर केसर भी विस्मित हो हो कर रह जाता | एक ओर तो माँ बेटे कों दुहाई दे रही है, डान्ट रही है, कर्कश शब्द सुना रही है, वहीँ इतने कोमल स्पर्श से नदी के पानी से उसका मुह धो रही है, कहीं चोट तो नहीं लग गयी हो, ध्यान से केसर कों परखती है |

केसर कहता है “माँ, मैं ठीक हूँ, कहीं चोट नहीं आ...” इतने में ही माँ उसका मुँह अपनी चुनरी से पोंछने के बहाने बंद कर देती है | “बड़ा आया तू, अपनी माँ कों बहलाने वाला, देख तो, धूप में रह रह कर कैसा काला होने लगा है |” नन्हा केसर यह सब काले गोरे का भेद नहीं समझता | उसके मन में केवल एक ही विचार ज्वार की तरह उठने लगता है, “पर माँ, कृष्ण भी तो काले थे |” माँ अट्टहास कर कहती है, “बेटा वे तो भगवान हैं, जो चाहे करें, उनके बस में तो सारी सृष्टि है, पर तू तो मेरा केसर है ना |” बेटा नहीं समझता, नानी की कहानी मे तो... खैर, मन ही मन केसर खुश होता है, “कान्हा भी काले, में भी काला”

\*\*\*\*\*

नानी ने सुदर्शन चक्र के बारे में बताया, और इस दौरान हर बच्चे की उँगलियों पर बारी बारी से जूट की टोकरी का ढक्कन रख सुदर्शन की तरह घुमा दिया | केसर के शस्त्रागार में आज एक और अस्त्र जुड़ गया | स्कूल में अग्रजों कों कॉपियां घुमाते हुए देखा था | जब घर में उनका अनुसरण करने कि कोशिश की थी तब पिता जी ने रोक कर समझाया था कि किताब, कॉपियों में माँ सरस्वती का वास होता है | यदि विद्या का अपमान हो, तो पाप होता है | उस दिन से केसर ने कभी ऐसा नहीं किया | बुहत देर तक ढक्कन से खेलने के बाद उसने ढक्कन वापिस रसोई की टोकरी पर रख दिया | एक बार जब माँ के साथ राह में कुलचे वाले से कागज की तश्तरियों में कुलचे खरीदे, तब माँ से पूछ बैठा, “माँ, दुकान वाले ने किताब से पन्ना फाड़ कर उसमे खाने का सामान बेचा, क्या उसने विद्या का अपमान नहीं किया?” माँ आश्चर्यचकित हो, निरूत्तर रह गयी | कितनी पुरानी बात आज कहाँ उठा कर पटक दी, माँ भी स्तब्ध थी |

नानी बताती की कैसे कन्हैया ताज़ा सांझा हुआ माखन मटकों से चुरा कर खाते थे | कि किस तरह यशोदा मैया ने उन्हें स्तंभ से बाँध दिया था | यह भी बताया की जब गोकुल की माताओं का घरों के फर्श पर माखन के घड़े रखना कन्हैया ने मुश्किल कर दिया, तो किस तरह उन्होंने मटके छत की कड़ियों से बांधना शुरू कर दिया, और कैसे कृष्ण ने युक्ति निकाली | केसर भली भांति जानता था कि चोरी बुरी बात है, इसलिए भोजन के समय ही माँ से रोटी में मक्खन लपेट कर देने का निवेदन करता | फीके मक्खन में कोई विशेष चाव न था, इसलिए उस पर थोडा नमक दाल कर खाना उसे स्वादिष्ट लगता |

केसर की छुट्टियाँ अब खत्म हो चली हैं, वह शहर लौट जाएगा | पर उसने एक मीत पाया है, कान्हा में, जो हमेशा उसके साथ रहेगा | केसर कुछ हद तक कान्हा जैसा बन ने की कोशिश भी करेगा, पर अंततः भूल जाएगा उस बचपन वाले कान्हा को | यह कहानियां जीवित रहेंगी, उसके अन्तः मन के किसी कोने में, सुशुप्त, अप्रत्यक्ष, लेकिन कान्हा के बदलावों में कहीं न कहीं सहयोगी होंगी | यह कहानियाँ जीवित रहेंगी, समय के साथ फिर से आएँगी, जैसे हमेशा से आती रही हैं |

इती शुभं ||